अपनी आत्मा (मूल्यों) से विरक्त होतीः वर्तमान शिक्षा

Kanchana Shukla
कंचन शुक्ला
शोधछात्रा
(शिक्षाशास्त्र विभाग)
नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

Received: Feb 20, 2018 Accepted: April 02, 2018

आज समाज भय के आवरण में लिपटा हुआ है। यह वीरभोग्या वसुंधरा आंतरिक कलह, दुर्व्यवस्था, साम्प्रदायिक भेदवभाव, जातिवाद, आर्थिक विषमता आदि संकीर्णता की अग्नि में जल रही है। यह भारत भूमि राकृष्ण, भीष्म पितामह, बुद्ध महावीर, विवेकानन्द और गांधी जी जन्मदात्री आज संघर्ष, आपाधापी, आधुनिकीकरण अभाव, लोकतांत्रिक, राजनैतिक मूलयों का क्षरण अशांति शोषण और भय से ग्रस्त है। वर्तमान समय में औद्योगिक वैज्ञानिक तकनीकी विकास अभूतपूर्व है परन्तु मस्तिष्क एवं हृदय के बीच एक बड़ा फसला है, बौद्धिक विकास और भावात्मक विकास के बीच तालमेल नहीं रहा गया है नई पढ़ी पाश्चात्य संस्कृति के कुप्रभाव से ग्रस्त है, भारतीय जीवन मूल्य ध्वस्त हो रहे है। इस भीषण समस्या से निपटने का एक मात्र साधन है। हमारी शिक्षा व्यवस्था को अपने देश की परिस्थितियों, आवश्यकताओं, सांस्कृतिक मान्यताओं, अनुभूतियों के योग्य बनाना।

माध्यमिक शिक्षा आयोग ने यह माना कि यदि देश में शांतिपूर्वक बिना हथियार उठाये, बिना नरसंहार के कोई परिवर्तन लाना है तो उसका एक ही हथियार है– शिक्षा। ''इसलिए चूँकि हमारी शिक्षा व्यवस्था पाश्चात्य विचारधारा पर आधारित है। हमारी शिक्षा का सैद्धान्तिक पक्ष, व्यवहारिक पक्ष, विधियाँ, पुस्तकें, शैक्षिक समस्याओं का समाधान तथा शिक्षा नीति प्रमुख रूप से विदेशों की देन है। अतएव हमारी शिक्षा प्रभावशाली नही है। बस अन्तर केवल इतना है कि अंग्रेज स्पष्टतः कहते थे कि हम क्लर्क बनाने की शिक्षा दे रहे हैं परन्तु उसे ही संशेधित करके हमारे यहां उसे वैज्ञानिक, डाक्टर, इंजीनियर, पायलट इतयादि बनाने के रूप में उच्चीकृत कर दिया गया हे। नाम बदल दिया स्वरूप वही है और शरीर बदल दिया आत्मा वही है। इसलिए शिक्षा जो मनुष्य को मनुष्य बनाने वाली तथा मनुष्य की आत्मा चरित्र का निर्माण करने वाली होनी चाहिए वह मशीन बनाने की ओर प्रगतिशील है।

स्पष्ट है कि जो पौधा एक विशेष जलवायु में उगता है वह विषमय जलवायु में नहीं पनप सकता। इसलिए जो शैक्षिक विचारधारा एक विशेष राष्ट्र की आवश्यकता की पूर्ति के लिए विकसित की जाती है। वह दूसरे राष्ट्र के लिए उपयोगी नहीं हो सकती इसलिए शिक्षा का स्वरूप पाठ्यक्रम व्यवस्था मूल्यांकन पद्धति सब स्वराष्ट्र के अनुकूल होनी चाहिए।

चूँकि भारतवर्ष विभिन्न संस्कृतियों धर्मो भाषाओं को यहां तक की भौगोलिक विषमाओं को अपने में संजोये हुए है। इसलिए यहां की शिक्षा व्यवस्था ''मूल्यों का निर्माण'' करने वाली होनी चाहिए। जिसमें आत्मा का परिष्करण हो सके, भौतिकता का नहीं। भारतीय परिप्रेक्ष्य के संबंध में ए0एस0 आल्टेकर ने बहुत अच्छा लिखा है–भारतवर्ष में शिक्षा को सदैव प्रकाश और शक्ति का स्रोत माना गया है जो कि हमारे शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक शक्तियों और उपकरणों के प्रगतिशील और समन्वित विकास के द्वारा हमारी प्रकृति को रूपान्तरित करती है और श्रेष्ठ बनाती है।

भारतीय शिक्षा दार्शनिकों ने अपने शिक्षा दर्शन में आदर्शवाद, प्रोयाजनवाद, मानववाद और बुद्धिवाद की अनेकता में एकता का समन्वय प्रस्तुत किया है। शंकराचार्य ने शिक्षा को मुक्ति का साधन माना है। विवकानन्द ने कहा था– ''धर्म शिक्षा का सबसे अधिक आन्तरिक सार है।''' श्री अरविन्दो के शब्दों में– ''बालक की शिक्षा उसमें जो कुछ सर्वोत्तम, सर्वाधिक शक्तिशाली सबसे अधिक आनतरिक और सबसे अधिक जागरूक है उसे बाहर लाना है, एक ऐसा साँचा निर्मित करना है जिसमें मानव की क्रिया और विकास चलने चाहिए और जो उसके आन्तरिक गुण और शक्ति के अनुकूल हो। उसे नयी वस्तुएँ अर्जित करनी चाहिए किन्तु वह उन्हें सर्वोत्तम रूप से, समान रूप से अपने विकसित प्रकार और जन्मजात शक्ति के आधार पर ही प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार याज्ञवल्क्य से लेकर विवेकानन्द, गाँधी, श्री अरविन्दो तक भारतीय शिक्षा शास्त्रियों ने शिक्षा की प्रक्रिया में आध्यात्मिक विकास और आन्तरिक पूर्णता पर ही बल दिया है। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने शिक्षा के सम्बन्ध में लिखा है– ''शिक्षा मस्तिष्क को अन्तिम सत्य खोजने के योग्य बनाती है, जो सत्य हमें पार्थिक बन्धनों से मुक्त करता है और हमें वह धन देता है जो सांसारिक वस्तु नही है बल्कि आन्तरिक प्रकाश है, जो शक्ति नहीं बल्कि प्रेम है, और जिसके कारण मानव उस सत्य को अपना बना लेता है और उसे ढंग से प्रकट करता है।'

इस प्रकार चूँकि उपर्युक्त सभी विवेचन भारतीय दार्शनिकों के है जिन्होंने हमेशा मनुष्य को शिक्षा में महत्वपूर्ण स्थान दिया है अर्थात् उसकी आत्मा के परिष्करण को उचित मूल्य माना है। परन्तु आज की शिक्षा प्रणाली स्वार्थ केन्द्रित बना रही है मनुष्य की प्रगति उसके लिए कोई महत्व नहीं रखता इसलिए शिक्षा की प्रगति के लिए जितनी भी आयोग व समितियों ने जो भी सिद्धान्त बनाये वे सब निरर्थक साबित हो रहे हैं।

वर्तमन शिक्षा प्रणाली सिर्फ मात्रात्मक विकास पर जोर देने वाली हो गयी है अर्थात् व्यक्ति ने कितनी उच्च डिग्रियाँ, उपाधियाँ तथा सफलता हासिल की है, उसके गुणात्मक विकास पर कोई जोर नहीं है अर्थात उन उपाध्यिों, डिग्रियों तथा प्रशासनिक पद से किसी व्यक्ति ने समाज एवं राष्ट्र के विकास के लिए कितनी सफलता हासिल की है यह कोई मायने नहीं रखता।

आज बच्चे भी शिक्षा को सिर्फ रोजगार पे स्केल, या पैकेज प्राप्त करने का साधन मात्र मानते हैं अगर वे शिक्षा प्राप्त करके कोई रोजगार नहीं प्राप्त कर पाते तो समाज उन्हें मजाक का पत्र बना देताहै तथा बच्चे भी कुंठा से ग्रस्त हो जाते है। आज शिक्षा प्रणाली ज्ञान केन्द्रित न होकर परीक्षा प्राप्तांक केन्द्रित हो गयी है। शायद इसलिए परीक्षा में अच्छे अंक लाने के लिए नित्य नकल के, परीक्षा पास करने के गलत साधनों तथा परीक्षा पास कराने वाले गैगों का तीव्रता से विकास हो रहा है। प्रतिभावान बच्चे असमय मृत्यु या मानसिक असंतुलन के शिकार हो रहे है। शिक्षा में आर्थिक स्थिति का बोलबाला, पद का बोलबाला है। शिक्षा को जहाँ बालकेन्द्रित

बनाने का प्रयास होना चाहिए था वहां परीक्षा केन्द्रित होती जा रही है। वर्तमान शिक्षा मनुष्य को मनुष्य बनाने के लिए नहीं बल्कि मनुष्य को स्वार्थी अपराधी, भौतिकतावादी, दूसरो को गिराकर आगे बढ़ने का प्रतिस्पर्धावादी, शेखी मारने वाला सुविधाभोगी बनाने वाली हो गयी है। वर्तमान शिक्षा स्टेट्स का प्रतीक है रैंक की मोहताज है रैंक पर जाने वाले भी इस समय पारदर्शी नहीं है तो उनसे पारदर्शिता की उम्मीद भी कैसे की जा सकती है। इस सब समस्याओं का एक ही निवारण है शिक्षा को उचित मूल्य प्रदान करना।

मूल्य क्या है?

मूल्य का शाब्दिक अर्थ है– उपयोगिता, वांछनीयता, महत्व। सामान्यतः किसी समाज में जिन आदर्शों को महत्व दिया जाता है और जिनसे उस समाज के व्यक्तियों का व्यवहार निर्देशित एवं नियंत्रित होता है, उन्हें उस समाज के मूल्य कहते हैं। परन्तु दृष्टिकोणों के हिसाब से भी मूल्य के अलग–अलग प्रकार है जैसे– दर्शनशास्त्र के अनुसार जीवन के प्रति दृष्टिकोण मूल्य है। धर्मशास्त्र–नैतिक नियम मूल्य है। मानवशास्त्री, सांस्कृतिक लक्षणों को मूल्य मानते है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार– रूचियो, अभिवृत्तियों तथा पसंद का स्वरूप मूल्य है। समाजशास्त्री–समाज के विश्वास आदर्श, सिद्धान्त और सामाजिक मानदण्डों को मूल्य मानते है। इस प्रकार संक्षेप में कह सकते हं कि–

1. मूल्य एक अमूर्त सम्प्रत्यय है। इनका संबंध मनुष्य के अर्न्तमन से होता है।
2. दीर्घ अनुभवों से निर्मित, समाज के विश्वास, आदर्श सिद्धान्त, नैतिक नियम, व्यवहार, मानदण्ड उससमाज के मूल्य बन जाते है।
3 मूल्य व्यक्ति को सही–गलत, अच्छा–बुरा, और करणीय–अकरणीय का निर्णय करने में सहायता करते है।

इस प्रकार मूल्य वह है जो सदैव परिस्थितियों से समझौता न करने में हमारी मदद करते हैं जो देश काल परिस्थिति के अनुसार बदलते रहते है अर्थात सत्य बोलना एक सार्वभौमिक मूल्य है लेकिन सत्य न बोलने से किसी सच्चे इंसान के प्राणों की रक्षा करना ज्यादा श्रेयस्कर है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि मूल्य वही है जो व्यक्ति की आत्मा महसूस करे, जिस पर निर्णय लेने के पश्चात् व्यक्ति को कोई पछलावा न हो उसके अन्दर भयर तथा घृणा न व्याप्त हो जो व्यक्ति को बलवान बनाये फिर भी संक्षेप में– सत्यं शिवम् सुन्दरम् को ही सार्वभौमिक मूल्य मना जाता ळै।

ये उपर्युक्त विशेषताएँ तो मूल्य की आदर्शवादी विशेषताएँ है परन्तु वर्तमान समय में शायद मूल्यों का स्वरूप कुछ इस प्रकार है–

- स्वार्थपरकता या व्यक्तिगत हित मूल्य।
- अपनी भलाई के लिए या स्वहित के लिए उचित अनुचित किसी भी साधन का उपयोग करना।
- अन्य की भलाई के बारे में सोचने का वक्त किसके पास है।
- उत्तरदायित्वों का अभाव आदर्शवाक्य (क्या मैंने दुनिया का ठेका ले रखा है)।
- अपने लाभ के लिए दोगला व्यवहार अर्थात् आदर्श सूक्ति है– राम, राम जपना पराया माल अपना।
- राष्ट्रहित, देश की रक्षा, सब राजनीतिक खेल का हिस्सा कुर्सी बचनी चाहिए भले ही देश बिक जाय।
- पहले मैथिलीशरण गुप्ता जी लिखते थे– भरा नहीं जो भावों से बहती जिसमें रसाधर नहीं, वह ह्रदय नहीं, वह पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।''

लेकिन आज देश में राजनीतिक विषमता को देखकर शायद उन्हें लिखना चाहिए था– भरा नहीं जो षड़यंत्रों से, लड.ती जिसमें वाणी की तलवार नहीं, वह मनुष्य नहीं वह जानवर है जिसमें बसती टकरार नहीं।''

शिक्षा में मूल्य ह्रास के कारण–

किसी भी समस्या का निवारण उसके कारण में ही छिपा रहता है। इसलिए, शिक्षा में मूल्य ह्रास के कुछ प्रमुख कारण हम इन रूपों में देखते हैं–

- शैक्षिक प्रशासन में नौकरशाहों का निजी स्वार्थ, मेड ईजी पुस्तकों के लेखक तथा वाह्य परीक्षाओ ंके परीक्षकों के निहित स्वार्थ।
- प्राइवेट ट्यूशन तथा कोचिंग संस्थानों में संलग्न शिक्षक समुदाय।
- उच्च कैपिटेशन फीस लेने वाली शिक्षा संस्थाओं का निहित स्वार्थ।
- वे राजनीतिक जो हजारों स्कूलों व महाविद्यालयों का नियंत्रण करते है वहां वे कर्मचारियों, शिक्षकों की नियुक्ति में हस्तक्षेप अपने निहित स्वार्थ के लिए करते हैं।
- जनसंख्या वृद्धि, निर्धनता, अभिभावकों में शिक्षा के प्रति जागरूकता का अभाव, घिसी पिटी परीक्षा प्रणाली, पाठ्यक्रम का व्यवहारिक उपयोग न होना, शिक्षा के सीमित संसाधन, बजट की अनुपलब्धता इत्यादि अन्य कारक भी है। सबसे बड़ा कारण कर्तव्य निर्वाह की भावना का अभाव।

शिक्षा में मूल्य विकास का मार्ग–

मूल्यों के विकास के लिए प्रत्येक को निम्न सात कदमों पर चलना चाहिए साथ ही मूलय का मानक भी अच्छी सोच (ळववक जीवनहीज) और अच्छे कार्य होना चाहिए। सातों कदमों में सदैव अच्छाई (Goodness) का भाव ही मूल्य निर्माण का मार्ग प्रशस्त करेगे–

1. अच्छे गुणों का निर्माण
2. अच्छे कर्म ईमानदारी से करना।
3. स्वभाव में श्रेष्ठता को प्रश्रय देना।
4. चिंतन सदैव आध्यात्मिक मौलिक तथा सृजनात्मक होना चाहिए।
5. चरित्र को सदैव श्रेष्ठ रखना क्योंकि कहा जाता है कि– धन गया तो कुछ नहीं कया, स्वास्थ्य गया तो कुछ गया लेकिन चरित्र गया तो सब कुछ गया।
6. व्यवहार में सदैव प्रेम सहयोग, त्याग, सहिष्णुता, विद्यमान रहनी चाहिए।

7. सभी कदमों में सदैव श्रेष्ठता तथा गरिमा का भाव होना चाहिए। अर्थात् मनसा कर्मणा, वाचा सदैव श्रेष्ठ होने चाहिए।

इस प्रकार इन्हें अलग–अलग संदर्भों में रखकर देखे तो मूल्यों के विकास के मार्ग इस प्रकार भी प्राप्त किए जा सकते है–

व्यक्ति की प्रगति के तीन सूत्र– उपासना, साधना, अराधना।

पारिवारिक सौहार्द के पंचसूत्र–

मंजुमत	–	सुन्दर विचार
विश्वपथ	–	सर्वमान्यता
सर्वोदय	–	सर्वहित
पूर्ण दृष्टि	–	पूर्णता

समाज उत्थान के साथ सूत्र– एकता, समता, बंधुत्व, आध्यात्मिकता, मानवधर्मा, योगानुशासन, सेवा।

भारत के संदर्भ में मूल्य मार्ग सामाजिक विकास के तीन भाग है– प्रेम, सहानुभूति एवं सहयोग इससे भारत की सूपर्ण जनता भारतीय समाज के रूप में गुथ जायेगी। भारत के विभिन्न संस्कृतियों का देश है इसलिए आज हमारे देश की सबसे बड़ी आवश्यकता है सांस्कृतिक सहिष्णुता। विभिन्न धर्मों का दशे होने के कारण किसी धार्मिक नियमों की शिक्षा नहीं दी जा सकती, लेकिन धर्मों को जोड़ने का मूल्य–सत्यता ईमानदारी एवं कर्तव्यपरायणता को विकसित किया जाना चाहिए। राजनैतिक दृष्टि से हमारे देश में लोकतंत्र है इसलिए छः मूल सिद्धान्त– स्वतंत्रता, समानता, भ्रातृत्व, न्याय, समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता जो संविधान की उद्देशिका का हिस्सा भी है इन मूलयों के विकास का प्रयास निरन्तर होना चाहिए। चूँकि आर्थिक दृष्टि से हमारा देश विकासशील है इसलिए यहाँ श्रम की गरिमा का मूल्य भी विकसित होना चाहिए।

भारत में मूल्य शिक्षा के प्रयास–

सर्वप्रथम श्री प्रकाश समिति (1969) ने शैक्षिक व्यवस्थ में नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों की स्थापना पर बल दिया। तत्पश्चात कोठारी कमशीन (1964–66) ने शिक्षा द्वारा विद्यार्थियों में समाजिक नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का विकास कर उसके चरित्र निर्माण की संस्तुति की। इस कमीशन के अनुसर–प्राथमिक स्तर पर मूल्य शिक्षा रोचक कहानियों के माध्यम से, माध्यमिक स्तर पर शिक्षक विद्यार्थी के पारस्परिक विचार विमर्श द्वारा विश्वविद्यालय में विभिन्न धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन द्वारा साथ ही इसके लिए शिक्षण संस्थाओं के टाइमटेबल में एक या दो घंटे मूल्य शिक्षा के लिए निर्धारित किए जाय।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के अनुसार मूलय शिक्षा का अर्थ, साम्प्रदायिक, हिंसा व अंधविश्वासी बलों से मुकाबला करना है और लक्ष्य भारतीय परम्परा को जीवित राख्ने के लिए राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्त करना तथा भाईचारे की भावना उत्पन्न करना है।

भारत वर्ष में ''सिटीजनशिप डेवलपमेन्ट सोसाइटी (ब्क्ब्) जो राजनैतिक एवं गैर साम्प्रदायिक संस्था है जो शिक्षक की भूमिका को महत्व देते हुए शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं महाविद्यालयों तथा डायट्स के सदस्यों में मूल्य श्क्षिा के विकास में मदद करने के लिए विभिन्न वर्कशाप एवं सेमिनारों का आयोजन करवाता है। 1992 में भारतीय दार्शनिक शोध संस्थान के तत्वाधान में एक सेमिनार का आयोजन हुआ जिसकी अध्यक्षता छब्म्ज् के तत्कालिक अध्यक्ष डा के गोपालन ने की थी इस सेमिनार में यह सुझाव दिये गये कि मूल्य शिक्षा के लिए स्वैच्छिक राष्ट्रीय आयोग की शीघ्रातिशीघ्र स्थापना की जाय जिसके विभिन्न प्रभाग हो जैसे– शिक्षा प्रशिक्षण विभाग, शोध विभाग, प्रसारण विभाग, सहकारिता व प्रशासन विभाग। ताकि राष्ट्रीय केन्द्र उपर्युक्त आयोग की देखरेख व निर्देशन में कार्य करें। तत्पश्चात् भारतीय दार्शनिक शोध संस्थान ने मूल्य शिक्षा के लिए गैर सरकारी–स्वैच्छिक आयोग तथा राष्ट्रीय केन्द्र की स्थापना की जिसके चेयरमैन प्रो0 किरीत जोशी बनाये गये।

छब्म्ज् ने स्कूल शिक्षा के राष्ट्रीय पाठ्यक्रम–2000 में यह चिंता व्यक्त की कि स्कूल शिक्षा में आधारभूत मूल्यों से विरक्ति उत्पन्न हो रही है इसलिए इसके लिए चेतना पूर्ण प्रयास करना होगा और इसके लिए मूल्य शिक्षा की विद्यालयी योजना प्रस्तुत की गयी। इनमें सुधार के क्रम में राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना–2005 मूल्यों की शिक्षा के स्थान पर शांति की शिक्षा जिसका मूल सिद्धान्त ''मिलजुलकर रहना'' को अहम् स्थान दिया गया।

निष्कर्षताः मूल्य शिक्षा केवल सरकार का ही दायित्व नहीं है, व्यक्तिगत सामाजिक, सामुदायिक, पारिवारिक जागरूकता की आवश्यकता है क्योकि ज्ञान या शिक्षा शून्य में विकसित नहीं की जा सकती उसके लिए वातावरण, सहयोग, सौहार्द तथा विकेन्द्रीकृत स्तर पर प्रयास की जरूरत है और साथ में महात्मा गाँधी ने शिक्षा की प्रक्रिया को तीन एच (H.H.H.= Hand, Hear & Head) स प्रस्तुत किया है। अर्थात् एक एच–जो हाथों की शिक्षा– जिससे सृजनात्मकता मौलिकता नवीकरण नित्यनवीन निर्माण तथा आधारभूत उत्पादकता का विकास होता रहे।

दूसरा एच–हृदय की शिक्षा– शिक्षा मुक्ति के योग्य बनाये चित की शुद्धि करें, मन और इन्द्रियों को वश में करना सिखाये, दासता से मुक्ति स्वतंत्रता उत्साह से रहना सिखाये और यह संभव है भावात्मक शिक्षा से। हृदय को परिष्कृत करने वाली शिक्षा से।

तीसरा एच0 मस्तिष्क प्रशिक्षण– अर्थात् ऐसे मस्तिष्क के निर्माण का प्रयास करना जो सूचनाओं के संग्रहण से संतुष्ट न हो जो शिक्षा को पढ़ना, लिखना, गणित के ज्ञान से सम्मिलित न करें। मस्तिष्क प्रशिक्षण, ऐसे मस्तिष्क का निर्माण जो जिज्ञासु हो, अन्वेषणात्मक तथा समस्या समाधान के नवीन विचारो, मार्गों तथा सिद्धान्तों को खोज करने वाला हो, तर्क चेतना, नवीन विचार, तथा समायोजन के एवं परिवर्तन के अनूठे नियमों को निर्मित करने वाले मस्तिष्क का निर्माण करने वाली शिक्षा ही मूल्यों को भी संरक्षित तथा विकसित कर सकती है। इस प्रकार मूल्यों का विकास संरक्षण तभी संभव है जब इस संसार का प्रत्येक जीव मन कर्म वचन से अपनी आत्मा, आध्यात्मिकता तथा मानवीय मूल्यों को नित्य संरक्षण एवं प्रगति प्रदान करें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. लाल बिहारी रमन, (2019), शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिव्द्धान्त, रस्तोगी पब्लिकेशंस–मेरठ, पृ सं–520–30
2. उपाध्याय डा प्रतिभा (2009): भारतीय शिक्षा में उदीयमान प्रवृत्तियाँ; शारदा पुस्तक भवन, इललाहाबाद प्र सं–201–220.
3. शर्मा आर ए (2009); शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया आर0लाल बुक डिपो, मेरठ, पृ 18–20
4. सक्सेना एन आर स्वरूप, चतुर्वेदी शिक्षा (2008) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, आर0लाल बुक डिपो, मेरठ, पृ सं 451–455
5. दैनिक जागरण, समाजचार पत्र (4 अप्रैल 2018) संपादकीय, लोक कल्याण से विमुख शिक्षा, गिरीश्वर मिश्र, पू कु हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा।
6. ओड़ एल के (2017), शैक्षिक प्रशासन, राजस्थान, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
7. विभिन्न सेमिनार में अतिथि प्रवक्ताओं के संग्रह।